Received: Aug '23
Revised:
Accepted: Sep '23

© 2023 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

HUMAN VALUES IN THE STORIES OF SENIOR STORYTELLER MAHENDRA BHISHMA
वरिष्ठ कथाकार महेन्द्र भीष्म की कहानियों में मानवीय-मूल्य

Rinki
Research Scholar, Department of Hindi, Career point university, Kota, Rajasthan, India
E-mail: pathakrinki1201@gmail.com

ABSTRACT

The way the discussions gained momentum after post-modernism, a lot was written in those discussions for marginalised society. In fact, the biggest achievement of postmodernity is to bring the neglected or marginalised society into the mainstream. This is a philosophical viewpoint that strongly supports sexual freedom. In these marginal discussions, women's discussion, transgender discussion, environmental discussion, old age discussion, male discussion, child discussion, farmer discussion, and many other discussions gained momentum. If we look at him as the pioneer of transgender discussion, then the writer whom we find more active in writing for transgenders as well as their rights is the senior storyteller Mahendra Bhishma, but here we look at some of his best stories apart from the transgender discussion. Will discuss.

उत्तर आधुनिकतावाद के बाद जिस तरह से विमर्शों ने जोर पकड़ा उन विमर्शों में हासिये पर जा चुके समाज के लिए बहुत कुछ लिखा गया। वास्तव में उत्तर आधुनिकता की बड़ी उपलब्धि है उपेक्षितों या हासिये पर जा चुके समाज को मुख्य धारा में लाना। यौन स्वछंदता का पुरजोर समर्थन करने वाली यह मूल्य मीमांसा को नकारने वाली चिन्तन दृष्टि है। इन हासिये के विमर्शों में स्त्री विमर्श, किन्नर विमर्श, पर्यावरण विमर्श, वृद्ध विमर्श, पुरुष विमर्श, बाल विमर्श, किसान विमर्श के साथ ही कई विमर्शों ने जोर पकड़ा। किन्नर विमर्श के पुरोधा के तौर पर यदि हमारी दृष्टि जाती हैं तब जिस लेखक को हम किन्नरों के लिए लेखन के साथ ही उनके अधिकारों के प्रति अधिक सक्रिय पातें हैं वे हैं वरिष्ठ कथाकार महेन्द्र भीष्म, परन्तु यहाँ हम किन्नर विमर्श से इतर उनकी कुछ श्रेष्ठ कहानियों की चर्चा करेंगे।

Keywords: Discussion, myth, mutah nikah, tragedy, etc.
बीज शब्द: विमर्श, मिथक, मुताह निकाह, त्रासदी आदि।

महेन्द्र भीष्म 'किन्नर विमर्श' के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं।यदि उनके एक ही उपन्यास को उनकी प्रसिद्धी का आधार मानें तो उनका 'किन्नर कथा' इसका ज्वलंत उदाहरण है।किन्नर विमर्श के अंतर्गत ही 'मैं पायल' भी उनकी उल्लेखनीय कृति है।उन्होंने अनेकानेक ऐसी कहानियाँ भी लिखी है जिसमें हाशियें पर चले गये इस तृतीय-लिंगी समाज की समस्याओं का वर्णन हैं जिनमे से – 'माई', 'तंग नजर', व 'त्रासदी' आदि प्रमुख हैं।

'किन्नर विमर्श' में स्थापित लेखक के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके महेन्द्र भीष्म के यदि समग्र साहित्य पर नजर डालें तो हम देखते हैं कि 'किन्नर विमर्श' से इतर भी उनकी कुछ श्रेष्ठ कहानियाँ हैं जिनमें मानवीय-मूल्यों की पड़ताल है, जिनको पढ़कर प्रेमचंद्र जी जैसे आदर्शवादी पात्रों से हमारा साक्षात्कार होता हैं तथा जो मानवता के उच्च-आदर्शों की स्थापना करते हैं।

उन्ही पात्रों में से एक 'वैष्णव' कहानी के डॉक्टर घोष आज कलंकित हो रहे डॉक्टरी महकमें में एक अवतार से नजर आते हैं।जो अंजान घायल हुए कमलेश सिंह का प्राथमिक उपचार करना अपना सर्वप्रथम कर्तव्य समझतें हैं और उपस्थित जन-समूह के सहयोग से शीघ्रता से उसे अपने ही कार में डालकर हॉस्पिटल ले जातें हैं।इस तरह से वें अपने मानवीय-कर्तव्य का निर्वहन कर एक मिशाल पेश करते हैं।इतना ही नहीं इंस्पेक्टर द्वारा यह बताये जाने के बाद भी कि कमलेश उनको जान से मारने के लिए आया था वह उसे सजा नही दिलवाना चाहते क्योंकि वह पहले से ही घायल हो चुका था और आज हॉस्पिटल में जिन्दगी और मौत से जूझ रहा था।वह उसे और दण्ड नही देना चाहते।आज समाज में जिस तरह से कुछेक दागदार लोगों ने इस पेशे को बदनाम करने की कोशिश की है, ऐसे लोगों से रोजमर्रा की जिन्दगी में आये-दिन हमारा सामना होता रहता है।उन कलुषित मनुष्यों के मध्य 'डॉक्टर घोष' जैसे चरित्र की उद्भावना कर लेखक ने बारिश की पहली बूंद के जैसे असीम तृप्ति का अनुभव कराया है।लेखक ने इन सम्वेदनाओं का प्रसरण सिर्फ परिपक्व व्यक्ति तक ही सीमित नही रखा अपितु 'निखट्टू' का मुख्य पात्र अजय भी इसमें भागीदार है।

माँ के द्वारा 'निखट्टू' शब्द का सम्बोधन सुनने वाले अजय के किशोर मन में मानवीय सम्वेदनाएँ किस तरह से हिलोरें लेती हैं उनका अंदाजा इस बात से ही लगाया जा सकता है कि वह निरीह बालक क्षतिग्रस्त पटरी को देखकर आने वाली ट्रेन में सवार लोगों की जान के बारें में चिंतित हो जाता है और दोस्तों के साथ छोड़ जाने के पश्चात भी हिम्मत नहीं हारता।अकेले ही सभी यात्रियों की जान बचानें की ठान लेता है।उस बियाबान में दूर-दूर तक उसे कुछ समझ नही आता की वह क्या करें? अचानक उसे पी.टी. मास्टर की कही बातें याद आती हैं कि लाल रंग खतरे का संकेत होता है। "अब वह क्या करे? समय बीतता जा रहा था....तभी उसे एक तरकीब सूझी उसने अपनी शर्ट उतारी फिर सफेद बनियान....अब उसे लाल रंग अपने शरीर से निकालना था जो उसकी धमनियों में बह रहा था।इस प्रकार वह सफेद बनियान को अपने खून से रंग कर लाल कर सकता था और खतरे का संकेत कर ट्रेन रुकवा सकता था।किशोर मन ने दृढ संकल्प लिया.... जोखिम भरा निर्णय था पर इसके सिवाय इतने कम समय में कोई अन्य उपाय भी नही था-1 इस निर्णय को लेने में वह तनिक भी सोच विचार नही करता और वह दृढ-प्रतिज्ञ बालक निर्भीकता से अपने निर्णय को अंजाम तक पहुँचाने के लिए अपनी जान तक जोखिम में डाल देता है।सर्व प्रथम वह अपनी हथेली को छलनी कर

उससे खून निकालने का प्रयास करता है परन्तु समय कम जान अपनी सफलता पर संशय कर वह अपनी कलाई की नस ही काट लेता है जिससे बनियान शीघ्रता से लाल रंग में रंग जाये।बनियान लाल रंग में रंग जाने के पश्चात वह शीघ्रता से उस दिशा में आगे बढ़ता है।

"एक हाथ में खून से रंगी बनियान वाली डंडी पकड़े, दूसरे हाथ को सीने के पास लगाए कलाई का बहता खून रोकने का प्रयास करते वह कोई तीन-चार सौ मीटर तक ट्रेन की दिशा में दौड़ा चला आया था।कलाई से निरन्तर रिस रहे रुधिर से उसे मूर्छा छाने लगी थी।एक-एक कदम आगे बढ़ाना उसके लिए मुश्किल पैदा कर रहा था।आँखें झपकना शुरू हो गयी थी।-2

अंततः ट्रेन आती है... रुक जाती है ...चालक दल उस बच्चें की प्राथमिक उपचार करता है...और फिर उसकी किस्मत बदल जाती है।माँ का वह निखट्टू अब सबके लिए साहस का पर्याय बन गया था।

इसी कड़ी में 'तीसरा कम्बल' भी लेखक की उत्कृष्ट कहानी है।गाँव का गिरधारी शहर में कम्बल मिलने की बात सुन शहर आ तो जाता है पर सर्दी के सितम के आगे बेदम हो जाता है।हांड कंपा देने वाली सर्द भरी रात में गिरधारी के मन में दो कम्बल पा लेने के पश्चात भी पत्नी के लिए तीसरा कम्बल पा लेने की लालसा बलवती हो जाती है और वही लालसा उसके मृत्यु का कारक बनती है।अब उस लालसा को उसका लालच कहा जाये या घर के मुखिया की विवशता जो घर के प्रत्येक सदस्य की खुशहाली का ख्याल रखना अपना धर्म समझता है।तभी तो घर के अन्य सदस्यों के लिए दो कम्बल पर्याप्त जानकर भी जब गिरधारी को अपनी पत्नी का ख्याल आता है तब वह सर्दी और बुखार से बेदम होने के बाद भी अपने दोनों कम्बलों को मित्रों के ही डेरे में छोड़ तीसरे कम्बल की लालसा में बाहर निकल आता है और अंततः यह कहानी एक दुखांतक मोड़ पर ख़त्म होती है।यह कहानी पाश्चात्य लेखकों की उन कहानियों सी प्रतीत होती हैं जिन्हें अपनी कृति को दुखांतक मोड़ देने में कोई समस्या नही होती हालाँकि भारतीय साहित्य में इस बात पर जोर दिया जाता रहा है कि कृति का अंत सुखांत ही हो।आधुनिक युग में प्रेमचंद की कहानियों ने इस मिथक को तोड़ा तभी तो उनकी कई कहानियों में दुखांतक मोड़ पर समापन होने के पश्चात भी वें कहानियाँ न सिर्फ सफल रहीं अपितु वें हिंदी साहित्य की नही विश्व साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं।महेन्द्र भीष्म कृत 'तीसरा कम्बल' भी इसी तरह की कृति है।

'क्या कहें' एक बालक और उसकी विधवा माता की एक मर्मान्तक कहानी है, जिसे स्वयं के शराबी भाई ने विधवा हो जाने पार एक बूढ़े के हाथ बेच दिया।उसका बालक उसके दिवंगत पति के भाई अर्थात अपने चाचा के पास ही रहता था।हर रोज उसे अपनी माता का इंतजार रहता कि वह आज आयेगी....बालक की कारुणिक पुकार से चाचा का दिल भी माँ समान भाभी का इंतजार करने लगता है।इस तरह से किसी मध्यस्थ के माध्यम से बिना किसी को बताये उनको आने को कहा जाता है जिससे माँ और बेटे का मिलन कराया जा सके।नियत समय पर मेले में मन्दिर के प्रांगण में दोनों का मिलन होता है।सभी मिठाई,प्रसाद नास्ता वगैरह ग्रहण करते हैं।बच्चे के लिए भी खिलौने लिए जाते हैं जिनको पाकर वह अति प्रसन्न है, प्रसन्नचित वह अबोध बालक माँ से याचना करता है-

"अम्मा अब हमाए संगे चलियो| सब याद करत तुमे, गइया ने बछड़ा दओं.... भैंस भी बया गयी... दोनऊ के संगे खयालत हों मैं।"

रोना धोना छोड़ जीतू खूब बतियाता रहा था अपनी अम्मा से और उसकी अम्मा हिचकी हिलकी भर, बार-बार चिपका लेती थी जीतू को अपने हिये से।उसे मालूम था बेटा कुछ पल बाद फिर बिछुड़ जायेगा और फिर कब मिलेगा पता नहीं? ..... पर बेटे को कुछ मालूम नहीं था कि उसकी अम्मा घड़ी दो घड़ी उससे मिलने आई है..... सत्यता से अनभिज्ञ वह नन्हा बालक अपनी अम्मा को पाकर फूला नहीं समा रहा था-3

अबोध बालक की बातें सुन-सुन के माँ का हृदय करुणा से भरता जा रहा था।वह रोते बिलखते हुए अपने देवर से कहती है कि कृपा कर के आगे से कभी मुझें अपने बेटे से मिलाने का प्रयास मत करना मेरा हृदय दर्द से फटा जा रहा है, यह असह्य दर्द बर्दाश्त के बाहर है।लेखक इस कारुणिक दृश्य का चित्रण करते हुए कहता है कि आज तो इस दृश्य को देखकर स्वयं भगवान को भी रोना आ जायेगा।एक तरफ जहाँ माता पुत्र से न मिलाने की देवर से प्रार्थना करती है वही दूसरी तरफ उससे पुनः न मिल पाने की बात सोच कर विलाप भी करती है।मानवीय संवेदनाओं को झकझोरती यह लेखक की एक उत्कृष्ट कहानी है।

'बुद्धचन्द्र गिरधारी लाल' इस कहानी में कुलीन वर्ग की एक महिला का सीधे-साधे ग्रामीण को अपशब्द बोलने पर बुद्धचन्द्र और गिरधारी जबाब तो देना चाहते हैं परन्तु मन मसोम कर रह जाते हैं परन्तु उसी महिला का बैग जब एक चोर चुरा कर भाग रहा होता है तब महिला के चिल्लाने पर गिरधारी ही आगे आता है और चोर से बैग छिनने में कामयाब होता है।मजबूत गिरधारी की गिरफ्त में चोर कशमशा रहा होता है परन्तु यह सोचकर कि यह बेचारा भी न जाने कौन सी मजबूरी में चोरी कर रहा है, गिरधारी अपनी गिरफ्त ढीली कर देता है।भागते-भागते चोर भी उसका मुरीद हुए बिना नही रह पाता वहीं दूसरी तरफ उस महिला का भी लहजा पूर्व से सुधरा हुआ लगता है तब वें कहते हैं- "नहीं मेमसाहब! हम गरीब मजदूर जरूर हैं, पर भिखारी नहीं, जब मजदूरी नहीं मिलती तो चले आते हैं, मंदिर-मस्जिद-गुरुद्वारा के बाहर प्रसाद के रूप में पेट की भूख मार लेते हैं।ईमानदार आदमी की आज के जमाने में कहीं पूछ नहीं है।मेहनत-मजदूरी करके अपना व अपने परिवार का पेट पालते हैं, जब काम नहीं मिलता तो अपना खून बेचकर पैसा गाँव भेजते हैं, पर चोरी लूटमार जैसा काम तो नहीं करते हम गाँव के देहाती लोग।" -4

उस भद्र महिला को अपने पूर्ववत वचन पर शर्मिंदगी होती है वह कहती है "अरे भैया मुझे माफ कर दो, मैं गलत थी।चलो हमारे साथ तुम दोनों हमारी कोठी में काम करना-5

इस तरह से उन दोनों भल-मानुषों को आख़िरकार कद्रदान मिल ही जाते हैं जहाँ उनकी मेहनत का उन्हें उचित मूल्य के साथ सम्मान भी मिलने लगता है और इस तरह से वें अपने साथ अपने परिवार का भी अच्छी तरह से भरण-पोषण करने में समर्थ हो सके।उस विषैले बोल वाली भद्र महिला का हृदय परिवर्तन करा लेखक ने उसके व्यवहार तथा ग्रामीण व्यक्तियों के जीवन में भी सुधार को दिखा सामाजिक सरोकार को भी बढ़ावा दिया है।

'एक अप्रेषित पत्र'के कैलाश अपनी पुत्री सुमेधा को अपनी बड़ी बहन के छत्रछाया में रखना चाहते हैं इसलिए फैसला लेते हैं कि आगे की पढाई के लिए उनकी बेटी उनकी बड़ी दीदी के

पास उनके साथ उनके घर पर रहे परन्तु दीदी का जबाबी पत्र आने के बाद उन्हें विश्वास नही हो रहा था क्योंकि जबाब उनके स्वाभाव के विपरीत था। उन्होंने लिख भेजा था कि वह उनकी महाविद्यालय में तो पढ़ सकती है परन्तु रहना उसे होस्टल में ही पड़ेगा।जबाब पाने के बाद कैलाश व्यग्र हो जाता है और यह सच्चाई जानने के लिए कि आखिर दीदी ने ऐसा क्यों लिखा वह स्वयं उनके निवास लखनऊ पहुँच जाता है।वहाँ दीदी उसे उनदिनों की याद दिलाती हैं जब वह गाँव को छोड़ शहर में चाचा जी के पास आगे की पढाई के लिए आ गई थीं।वो कहती हैं कि सबको लगता कि शायद उनकी सफलता के द्योतक वहीं दिन हैं परन्तु उसके विपरीत आज उन्होंने अपने भाई को उनदिनों की यातनाओं और प्रताड़ना के बारे में बताया जो कुछ उन्होंने उस घर में झेला था, साथ ही अपने पिता के नाम एक पत्र भी लिखा जिसे वें कभी प्रेषित नहीं कर पाई।आजतक जीवन के उस कटु सच्चाई को सिर्फ वहीं जानती थीं जिसे चाहकर भी अपने पिता को नहीं बता पाई वही उन्होंने अपने भाई के हाथ में आज रख दिया वो अप्रेषित पत्र।

"ईश्वर कभी किसी माँ-बाप को ऐसी स्थिति ना दे कि उन्हें अपने बच्चे किसी और के आसरे में देकर पढ़ाने पड़ें।काश! हमारे घर की परिस्थितियाँ अनुकूल होतीं.... काश हमारें गाँव के स्कूल में हाई स्कूल से आगे की कक्षाएँ होतीं"-6

दीदी की यह मानसिक स्थिति कमोबेश उन बहुत से बच्चों का दर्द बयाँ करती हैं जो ऐसी स्थिति को झेलने पर मजबूर हैं क्योंकि उनके पास भी संसाधनों का अभाव है।परन्तु इस कहानी में लेखक ने बड़ी ही सूक्ष्मता से इस बात को उकेरा है कि दीदी उन विषम परिस्थितियों से टूटती नही न ही कोई गलत कदम उठाती हैं यहाँ तक कि पिता के नाम पत्र लिख कर भी प्रेषित नही करती अपितु अपने घर की विषम परिस्थितियों को सुधारने के लिए स्वयं ही वह गरल पी संघर्ष करती हुई अपनी प्रतिभा से महाविद्यालय की प्राचार्य बनती हैं।

यूँ तों कथाकार भीष्म जी ने किन्नर वर्ग जैसे हासिये पर चले गये वर्ग को अपनी आवाज देकर जहाँ उनकी आवाज को बुलंद किया वही अपनी कहानी 'बचाओं' में वह वृक्षों की मूक आवाज भी अध्येताओं तक पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं- 'आकाश में सूर्य तेजी से चमक रहा था।वह धरा जो कभी सूर्य किरणों को तरसती थी।आज प्रकाश पाकर भी दुःखी थी उसे भी हम सबसे बिछुड़ने का बेहद अफसोस है।परन्तु हाय! उसे भी विधाता ने शिवाय अफसोस करने के कुछ नहीं दिया, जो विरोध कर पाती| क्या विधाता ने मनुष्य के सिवा किसी को भी विरोध करना नहीं सिखाया? विधाता ने ऐसा अन्याय क्यों किया? आखिर क्यों उसने हम सबको अपनी रक्षा और विरोध कर पाना नहीं सिखाया? काश.....-7

लेखक सामाजिक सरोकार का कथाकार है तभी तो उसे मूक प्राणियों का दुःख भी दर्द देता है।बड़े पेड़ को जब लोग काट रहे होते हैं तब भी वह स्वयं की नही अपितु अपने नन्हें शिशु अर्थात छोटे पेड़ की भविष्य को लेकर चिंतित है तभी तो कटते-कटते भी वह अपने बेटे पर अपनी छाया कर जाती है-

'बेटे!' माँ की कारुणिक पुकार सुन मैं चौंका।वह कराह कर मेरी रक्षा करने के लिए झुकी थी मैं बिलख उठा।माँ की बेबश आँखों में मैंने झाँक कर देखा, जिसमें अपने से ज्यादा मेरी चिन्ता थी।उसने मेरी आँखों से बह रहे आँसुओं को पोछ मुझें अपने आँचल में समेट लिया...-8

मानव जीवन और मरण के बीच झूलता प्रभु के हाथ की एक कठपुतली सा प्रतीत होता है जितने समय तक उसे अपने चरित्र का अभिनय करना होता है वह उसे निभाता है और नियत समय पर संसार से रुखसत भी हो जाता है।सृष्टी नियंता के बुने इस जाल में कभी-कभी वह इतना निरीह हो जाता है कि चाहकर भी कुछ नही कर सकता।जीवन का उतरार्द्ध भी कुछ ऐसा ही समय है 'व्यथा-कथा' जीवन के इसी सच्चाई से हमारा परिचय कराती है।नानकदास कहता है-'बहू बेहद रोष में बोले जा रही थी।बेटे ने आव देखा न ताव बहू के सामने एक तेज झापड़ मुझें मार दिया।मैं लड़खड़ाकर गिर पड़ा।...मैं कुछ सोचता तभी बेटे ने मुझें उठाया और बाहर के कमरे में पड़े दीवान पर बैठाते रोते हुए मुझसे बोला, 'बाबूजी! मुझे माफ़ कर देना।मैं जानता हूँ आप निर्दोष हैं।आप ने मेरे पाप की सजा अपने ऊपर लेकर भुगती है।आप अपनी बहू को कुछ नहीं बताना, नही तो बाबूजी! सब ख़त्म हो जायेगा।'-9 नानकदास मूकदर्शक बन अपने बेटे की बात सुनता है और चुपचाप अपना घर छोड़ हमेशा के लिए उस वृद्धाश्रम में आ जाता है जहाँ सामान्य से विशिष्ट किसी भी वर्ग के व्यक्ति में कोई भेद भाव नही है।इसी तरह से कथाकार महेन्द्र भीष्म ने अलग-अलग वर्ग की पीड़ा को अपनी कहानियों में स्वर दिया है।

'जो रब राचे' की मुख्य पात्र शालिनी जिस दर्द से गुजर रही है आज वह कमोबेश उन सभी लडकियों का दर्द है जो उस जैसी जटिल परिस्थितियों में फंसी हुई हैं, वह इन भयावह परिस्थितियों से इस कदर डर जाती हैं कि सख्त कदम उठाने को भी मजबूर हो जाती हैं तभी तो शालिनी को अधेड़ मुसलमान से विवाह करने पर भी गुरेज नही, वह कहती है- "सर! मुझे कम से कम तीन दिन के लिए किसी की बीबी बनकर रहने का प्रस्ताव मिला है, वह भी बाकायदा एक मुस्लिम अधेड से मुताह निकाह करके, जिसकी पहली शर्त ही है कि मैं पहले इस्लाम धर्म अपनाकर मुस्लिम बनूँ।"-10

इसके अतिरिक्त महेन्द्र भीष्म की अन्य कहानियों में 'व्यथा-कथा', 'अब नाथ कर करुणा', 'दफ़ा 376', 'मसीहा', विरेन्द्र, 'जो रब राचे', 'जेठा', 'सोजा बारे बीर', 'बीड़ी पिला देते साब', 'बिन्नूँ', 'वक्त-वक्त की बात', 'हलाला', 'कमल का पत्ता' आदि भी उल्लेखनीय कहानियाँ हैं जिनमें मानवीय मूल्यों को आसानी से तलाशा जा सकता है।

निष्कर्ष

हम कह सकते है कि कथाकार महेन्द्र भीष्म जी ने बहुत ही पड़ताल के साथ समाज के प्रत्येक वर्ग की पीड़ा को अपनी दक्ष लेखनी से जीवन्तता से उकेरा है।उनकी कहानियों के पात्रों के दर्द से हम द्रवित हुए बिना नही रह सकते।इन कहानियों से पाठक का तादात्म्य इस कदर स्थापित हो जाता है कि वह साधारणीकरण की अवस्था में पहुँच अश्रु बहाने को मजबूर हो जाता है।उन्होंने समाजिक सरोकार को सर्वोपरी रखा है। निश्चय ही भीष्य जी की ये कहानियाँ साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

REFERENCES

1. Bhishma, M. (2011). Kya Kahen (2nd ed.). Sulabh Prakashan, Lucknow, Page No. 44.
2. Bhishma, M. (2011). Kya Kahen (2nd ed.). Sulabh Prakashan, Lucknow, Page No. 45.

3. Bhishma, M. (2011). Kya Kahen (2nd ed.). Sulabh Prakashan, Lucknow, Page No. 123.
4. Bhishma, M. (2015). Lal Dora v Anya Kahaniyan (1st ed.). Samyik Books, New Delhi.
5. Bhishma, M. (2011). Ek Apreshit Patra (3rd ed.). Sulabh Prakashan, Lucknow, Page no. 159.
6. Bhishma, M. (2011). Ek Apreshit Patra (3rd ed.). Sulabh Prakashan, Lucknow, Page no. 7.
7. Bhishma, M. (2021). Bade Saab evm Anya Khaniyan (1st ed.). Kavya Publication, Page No. 129.
8. Bhishma, M. (2021). Bade Saab evm Anya Khaniyan (1st ed.). Kavya Publication, Page No. 51.